Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-31-38

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)31-38
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. जयशंकर शुक्ल
....

Corresponding Author :
डॉ. जयशंकर शुक्ल
....

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा

शोध संक्षेप :

साहित्य और समाज के संबंधों की जड़े बहुत गहरी होती है तथा दोनों एक-दूसरे के पूरक भी है। साहित्य अपने युगीन परिवेश से प्रभावित होता है और प्रभावित भी करता है। अपने युगीन समाज की समस्त हलचलों से साहित्य विचलित व परिवर्तित होता है। समाज में होने वाली समस्त हलचलों व घटनाओं का साहित्यकार पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। एक तरह से समाज ही साहित्यकार का ग्रंथ है, उससे ही वह अपनी कल्पना से नई उड़ान भरता है। किसी भी काल का साहित्य अपने युग से प्रभावित और परिस्थितियों से अछूता नहीं रहा है। साहित्य में सर्वप्रथम हम रामायण में देखते हैं कि राम अपने पिता के कहने मात्र से ही राज्ञ पाठ त्याग कर वन गमन के लिए निकल जाते हैं। आज भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास तीव्र गति से हो रहा है और हम अपने संस्कारों को भूल बैठे हैं। शिक्षा ने हमें सिर्फ शिक्षित बनाया है तथा ये हमें संस्कार नहीं दे पाई है तभी तो इसका खामियाजा आज समाज भुगत रहा है व असुरक्षित महसूस कर रहा है। समाज एवं समाज की परंपराओं का बूढ़े होना मानो एक अभिशाप सा है।

बीज शब्द: कहानी, साहित्य, ऐतिहासिक, परिप्रेक्ष्य, यात्रा, सामाजिक-प्रभाव, ग्राह्यता, समीक्षात्मक, अध्ययन, कहानी-साहित्य, प्रमुख विशेषताएं, सत्यों का सरलीकरण, उद्देश्य प्रस्फुटन, मानवीय संवेदनाएं, लक्ष्यों, संबंध, मध्यम मार्ग, प्रतिपादन।

1. अध्ययन का उद्देश्य:

1. चिंतनशील अध्ययन के परिवर्तनकारी अनुभव को सभी के लिए प्रेरणा के रूप में प्रदर्शित करें पाठक, समाज परिवर्तन की अपनी यात्रा स्वयं शुरू करें।
2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा के मूल में अनुशंसित एवं अनुदेशित मार्ग अपनी कथोपकथन की भावना द्वारा ज्ञान देने वाला है, शांति देने वाला है, निर्वाण देने वाला है, अतः कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही श्रेयस्कर है।
3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा विश्वकल्याण के लिए मैत्री भावना पर बल देती हैं। ठीक वैसे ही जैसे तत्कालीन अन्य सामाजिक साहित्य के विधाओं ने मित्रता एवं सह अस्तित्व की भावना के प्रसार की बात कही है।
4. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा के विवेचन में यह माना जा सकता है कि आपसी सद्भाव संवेदनशीलता एवं मैत्रीरूपी मोगरों की महक से ही संसार में सद्भाव का सौरभ फैल सकता है।
5. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा में वर्ण तत्वों के आधार पर हम कर सकते हैं कि शब्दों विचारों भाव संवेदनाओं को लेकर साहित्यिक परिवेश में मित्रता ही सनातन नियम है।
6. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा अपने आप में भारतीय और भारतीयता को समाए हुए हैं। यह निश्चित तौर पर मानवीय संवेदनाओं और लक्ष्यों के मध्य में संबंध में रखते हुए मध्यम मार्ग का प्रतिपादन करते आगे बढ़ती है इसने मानव मात्र के लिए कल्याण का मार्ग उसके इसी जीवन में प्रशस्त किया है।

2. तर्क:

प्रस्तुत शोध पत्र में कहानी साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कहानी की यात्रा का सामाजिक प्रभाव एवं ग्राह्यता पर प्रकाश डालते हुए, इसका समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से कहानी साहित्य की प्रमुख विशेषताओं एवं सत्यों का सरलीकरण तथा इनके उद्देश्य प्रस्फुटित हो सकें।

3. अनुसंधान क्रियाविधि:

3.1. नमूना: नीति दस्तावेज़ और दिशानिर्देश

3.2. उपकरण: गुणात्मक दस्तावेज़ विश्लेषण

3.3. डिज़ाइन: वर्णनात्मक साहित्य समीक्षा

4 अध्ययन :

मुख्य रूप से निष्कर्षों के लिए फॉर्म दस्तावेज़ों में पहले से मौजूद डेटा का उपयोग करता है/आशय।

5 प्राथमिक स्रोत:

5.1. हिंदी एवं अन्य आधार ग्रंथ।

5.2. अनुवाद एवं मूल हिंदी साहित्य।

6. प्रस्तावना:

हम साहित्य की प्रगतिगामी सोच एवं परंपरा को वैदिक काल के साहित्य से आधुनिक काल के साहित्य में निरंतरता के साथ

देख सकते हैं। तुलसीदास जी ने एक तरफ साहित्य को स्वांत सुखाय: कहकर व्यक्तिनिष्ठ कहा है और वहीं दूसरी तरफ" कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कह हित होई।" कहकर साहित्य को समाज का धर्म भी बताया है। इस प्रकार तुलसीदास जी ने व्यक्ति परिष्कार के साथ साहित्य के सामाजिक मूल्य को भी स्वीकार किया है। हिंदी कथाकारों ने अपनी रचनाओं में हमारे समाज की प्रत्येक समस्याओं पर विचार-विमर्श किया है और उसे कलमबद्ध भी किया है जैसे नारी विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श एवं आदिवासी विमर्श। साहित्य प्रारंभ से ही समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य में प्राचीन काल से ही वृद्ध विमर्श को भी स्थान दिया जा रहा है। साहित्य में सर्वप्रथम हम रामायण में देखते हैं कि राम अपने पिता के कहने मात्र से ही राज्ञ पाठ त्याग कर वन गमन के लिए निकल जाते हैं। आज भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास तीव्र गति से हो रहा है और हम अपने संस्कारों को भूल बैठे हैं। शिक्षा ने हमें सिर्फ शिक्षित बनाया है तथा ये हमें संस्कार नहीं दे पाई है तभी तो इसका खामियाजा आज समाज में बुजुर्ग वर्ग भुगत रहा है व असुरक्षित महसूस कर रहा है। उसका बूढ़े होना मानो एक अभिशाप सा है।

7. विवेचन, व्याख्या एवं विस्तार में कथाओं की भूमिका :

वांगमय में कथा साहित्य का अपना विशेष स्थान रहा है। कथाएँ अपना अस्तित्व मानव मात्र के जीवन के विविध आयामों को पारिभाषित करते हुए सदैव से बनाए रखती आ रही हैं। वैदिक साहित्य में कुछ संशोधनों को आत्मसात करने के उपरान्त ऋचाओं के प्रादुर्भाव, विवेचन, व्याख्या एवं विस्तार में कथाओं की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद इनके ज्वलंत व प्रामाणिक प्रतिमान हैं।

7.1. कथा साहित्य क्षेपक-कथाएं :

क्षेपक-कथाओं ने कथा साहित्य को वास्तविकता, कल्पना, विचार एवं गल्प से अलग एक नवीन आधार प्रदान दिया है। वैदिक, उत्तर वैदिक एवं उसके बाद के काल में भी कथाएँ अपने अस्तित्व को लेकर संघर्ष रत रही हैं।महाकाव्य काल में रामायण एवं महाभारत का मूल ही कथाओं को आधार मानकर चलता है। यहाँ तक आते-आते कथाओं के लौकिक रूप का परिचयभी हमे प्राप्त होने लगता है। लौकिक कहानियाँ एक सामयिक समाधान भी मानी जा सकती हैं, जो कल्पना का आश्रय लेकर प्रतीकों के माध्यम से विकास करती हैं। पुराण इसके विशिष्ट उदाहरण हैं।

7.2. जातक कथाओं के रूप में कहानियां :

पालि एंव प्राकृत भाषाओं में बुद्ध के उपदेशों का संग्रह किया गया। इन उपदेशों के साथ-साथ बहुत सारी कथाएँ भी आकार प्राप्त करती है। आगे चलकर इन्हें जातक कथाओं के रूप में देखा जा सकता है। कल्पना और विचार की तदनुरूपता तथा लौकिक व पारलौकिक पात्रों के माध्यम से लोक संग्रह के लिए नायक के महिमामंडन का यह क्रम लालित्य से भरपूर है। लौकिक कथाओं का विशद व व्यापक स्वरूप हमें पंचतन्त्र की कहानियों में देखने को मिलता हैं।

7.3. पंचतंत्र की कहानियाँ :

एक विशेष कालखंड में पठन-पाठन के लिए किसी भी शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मानदंड को सामने रखते हुए पाठ्यक्रम का एकमात्र समष्टिगत के रूपों में कहानी ही रही है। जिसके माध्यम से समस्त विषयों का ज्ञान विद्यार्थियों को अनुभव और क्रिया के माध्यम से देने का कार्य किया जाता रहा। पंचतंत्र की कहानियां हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। अनुभव शब्दों के पाँव किस प्रकार क्षिप्र गति से अपनी यात्रा आगे बढ़ाता है, सहज दृष्टव्य है। लोक कथाएँ एवं बोध कथाएँ अपने आपको यथार्थ के धरातल पर

यहीं चरितार्थ करती हैं। प्राचीन काल के साहित्यिक परिदृश्य में कथा साहित्य समस्त विधाओं की सहचरी रही है, कथानाक प्राण एवं संवाद उसकी जिजीविषा के द्योतक माने जाते रहे हैं।

8. विधाओं के मूल में कथा का होना :

नाटक, काव्य, तथा इनकी अन्य सहयोगी विधाओं के मूल में कथा का होना अति आवश्यक माना जाता रहा है। कवियों ने अपने काव्य के नायक को उसके परिवेश एवं कथानक लेकर कथोपकथन के माध्यम से काव्य-सरिता का अवगाहन किया करते रहे। इस प्रकार कहानियों का मूल वांग्यम के मूल से आबद्ध है, जो अपनी यात्रा वांग्मय की यात्रा के साथ करती हैं। इसके विभिन्न पड़ावों ने इसके स्वरूप का समय समय पर सुविधा व आवश्यकतानुरूप निर्धारण किया है। वार्तालाप में पात्रों की भौगोलिक स्थिति के साथ-साथ उनके विद्वता का भी ध्यान रखा जाता रहा है।

8.1. आधुनिक कहानी के युग को अपनी प्रथम आवाज :

गद्य एवं पद्य इन दो तुलाओं पर साहित्य की विधाएँ तुलती रही हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयास व नेतृत्व में सन् 1900 से गद्य विधा का क्रमशः प्रादुर्भाव एवं विकसित होने की प्रक्रिया दिखाई पड़ने लगती है। “रानी केतकी की कहानी” के द्वारा इंशा अल्ला खां ने आधुनिक कहानी के युग को अपनी प्रथम आवाज दी। परन्तु कुछ विद्वान “इन्दुमती’ को हिन्दी की पहली मौलिक कहानी मानते हैं, जिसे किशोरी लाल गोस्वामी जी ने लिखा था। जब हम किसी भी विद्या के प्रथम सृजन की बात करते हैं तो हमारी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। यह जिम्मेदारियां कई अर्थों में हमारे अपनी शोध, सृजन, समाधान और सरोकार की ओर उन्मुख होती हैं। हमारे अपने विचारधाराओं को अतीत के विचारधाराओं से जोड़कर के हमारे द्वारा उसे मूल को स्थापित करने की प्रक्रिया के रूप में यह स्थिति हमारे समक्ष आती है।

8.2. दूसरी मौलिक कहानी:

सन् 1900 में इन्दुमती के लेखन से 2 वर्ष बाद हिन्दी गद्य संसार को उसकी दूसरी मौलिक कहानी “ग्यारह वर्ष का समय” मिलती है, जिस के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल थे। वास्तव में शुक्ल जी की यह कहानी के समकालीन आधारों को प्रकट करते हुए यह नई कहानी कई मायनों में नए-नए प्रतिमान को आगे बढ़ाने की साक्षी रही है। विवरण, विवेचन, वर्णन, विश्लेषण एवं व्याख्या इन तमाम शिल्पगत भावनाओं के माध्यम से उस कालखंड में सक्रिय रचनाकारों के लिए नए रास्ते तो खोलती ही है साथ ही साथ उपमानो का गठन कर कालबोध के अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक सूत्र में बांधने का कार्य भी करती है।

8.3. तीसरी मौलिक कहानी:

इसी वर्ष पण्डित और पण्डिततानी नामक कहानी प्राप्त होती है, जो गिरिजा दत्त वाजपेयी जी द्वारा लिखी गयी। वास्तव में यह वह कालखंड था जहां पर की नई-नई साहित्यिक विधाओं ने नए-नए कलेवर को धारण करना प्रारंभ किया था। यहां पर भाषा, भाव, विचार, विश्लेषण, विवेचन के साथ-साथ कई शिल्पगत अवधारणाओं को आतंकवाद करने की प्रक्रिया से गुजरने की शुरुआत हुई थी। इस तरह से हिन्दी गद्य साहित्य में आधुनिक मौलिक कहानियों के क्रम निर्धारण में ये तीन कहानियाँ तीन महत्व पूर्ण कड़ियों के रूप में मानी जा सकती हैं।

9. सरस्वती का प्रकाशन:

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कुशल संपादन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका “सरस्वती” उस समय के समाज में अपना विशेष स्थान रखती थी। उनके आह्वाहन पर मैथिलीशरण गुप्त ने 1910 में “निन्यानवें का फेर” नामक कहानी लिखी तो अगले दो वर्ष बाद 1912 में हमारे सामने प्रसाद अपनी चार कहानियों के माध्यम से आते हैं। इनकी ये चारों कहानियाँ उनकी प्रथम कहानी संग्रह “छाया” में बाद में प्रकाशित हुई जिनमें ग्रामा का विशेष चर्चित रूप देखने में आता है।

9.1. आधुनिक हिन्दी कहानी का प्रादुर्भाव :

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक हिन्दी कहानी का प्रादुर्भाव काल बीसवीं शताब्दी का प्रथम दशक रहा है तथा अधिकतर विद्वान 1903 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित कहानी “ग्यारह वर्ष का समय” को कहानी-युग को शुरूवात देने वाली कहानी मानते हैं। यह क्रम बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में ओर पुष्ट होता दिखाई देता है।

9.2. कहानीकार अपनी शुरुआती कहानियों के साथ :

जब जयशंकर प्रसाद एवं प्रेमचन्द अपनी अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे सामने आते हैं। ठीक उसी काल खण्ड में हमारे सामने चन्द्र धर शर्मा “गुलेरी”, वृन्दावन लाल वर्मा, राधिका रमण सिंह, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भरनाथ “जिज्जा” पदुमलाल पुन्ना लाल बख्शी, बाल कृष्ण शर्मा नवीन तथा सुदर्शन जैसे कहानीकार अपनी शुरुआती कहानियों के साथ सामने आते हैं।

9.3. कहानी के परिदृश्य में दो ध्रुव :

कहानी के परंपरागत नए परिवेश को जब हम देखते हैं तो यह भिभिन्न चरणों में बंटा हुआ दिखाई पड़ता है। यह चरण समय-समय पर हमें नई-नई विचारधाराओं के सूत्रपात का संकेत भी करते हैं। यह नए थॉट्स ऑफ स्कूल की समय अनुसार विचारोत्तेजक व्याख्या भी करते हैं।उस विशेष कालखण्ड में कहानी के परिदृश्य में दो ध्रुव हमारे सामने आते हैं, जिसमें तत्कालीन समस्त कहानीकारों को सम्मिलित करके उनका आकलन किया जाता रहा है। ये दो ध्रुव जयशंकर प्रसाद एवं प्रेमचन्द के नाम से जाने जाते है। इन दो ध्रुवों से अलग भाव भूमि, कथ्य एवं बुनावट के साथ आने वाले कहानीकारों में पांडेय बेचन शर्मा, उग्र, यशपाल एवं जैनेन्द्र का नाम आता है।

10. कहानी में एक नवीन आन्दोलन का सूत्रपात :

ये कहानीकार हिन्दी कहानी में एक नवीन आन्दोलन का सूत्रपात करते हैं। कहानीकारों ने समय के साथ साथ कालबोध को लक्ष्य करके समाज की मांग के अनुसार नवीन शिल्पों के आधार पर नए कथा रूपों को आगे बढ़ाने का कार्य किया। जिनकी नवीनतम अवधारणाओं के माध्यम से कहानी विधा में सर्वथा नवीन अभियान की शुरुआत हुई, जिसे हम एक नया आंदोलन भी कह सकते हैं। कथा साहित्य में कथाकारों के द्वारा कुछ नया करने एवं नया कहने की इस प्रक्रिया में कहानी ने नए परिधान धारण कर लिया जो उसके नएपन के साथ-साथ नए अभियान की वाहक भी रही। इन कथाकारों ने अपनी कहानियों में एक नयी चेतना का सूत्रपात किया। जहाँ यशपाल ने प्रगतिवादी कहानियाँ लिखी, वहीं पांडेय बेचन शर्मा उग्र की कहानियों में प्रकृतिवाद मुखर हो उठता है।

10.1. कहानियों में मनोवैज्ञानिक यथार्थ का चित्रण:

जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में मनोवैज्ञानिक यथार्थ का चित्रण किया। मनोविज्ञान सदैव से ही मानव मन को पढ़ने विश्लेषण करने विवेचन करने एवं वर्णन करने की प्रक्रियाओं पर टिका हुआ है। मनुष्य अपने जीवन काल में निरंतर स्वयं के और अपने साथ जुड़े

हुए लोगों के मन को पढ़ने का प्रयत्न करता रहा है। उसका यह प्रयत्न नए-नए भाव विचारों और कथाओं को जन्म देता है। आगे चलकर जैनेन्द्र की बीजारोपित परम्परा को अज्ञेय, इलाचन्द जोशी तथा भगवती प्रसाद वाजपेयी ने आगे बढ़ाया। प्रकृतिवाद में उग्र अकेले रह गए, आचार्य चतुर सेन शास्त्री ज्यादा दूर तक उनका साथ नहीं दे पाए। इसी प्रकार प्रगतिवादी कहानी धारा में विचार का निकष मार्क्सवाद रहाजहाँ पर यशपाल के साथ महापण्डित राहुल सांकृत्यायन वन रहे। आज के जन कहानी आन्दोलन का सूत्र यही प्रगतिवाद ही माना जा सकता है।

10.2. कथा साहित्य में कई तरह के आन्दोलन का सूत्रपात :

स्वतन्त्रता के बाद कथा साहित्य में कई तरह के आन्दोलन का सूत्रपात होता है। कथा साहित्य में उसकी अंतर वास्तु शिल्प विचार भाव एवं निरूपण की क्षमता के आधार पर कहानीकारों ने नए-नए मार्गों का अनुसरण करते हुए एक नवीन आधार मंच की स्थापना की। यह कई नए तरह के आंदोलन के सूत्रपात के रूप में भी देखा जाता है। यहाँ से नई कहानी अकहानी, समान्तर कहानी, सहज कहानी, साठोत्तर कहानी, सचेतन कहानी, आंचलिक कहानी, ग्राम कथा जैसे चले आन्दोलनों ने कहानी साहित्य को नई दिशा दी तथा अपने बहाव में कई कहानीकारों को स्थापित किया। इसी आन्दोलन ने ही हमें कथा साहित्य की त्रयी कमलेश्वर, मोहन राकेश तथा राजेन्द्र यादव दिए जो कि कथा साहित्य को नवीनतम ऊंचाइयों पर ले जाने वाले बने।

10.3. कथा साहित्य की मंदाकिनी के नवीन धाराएं:

इसी आन्दोलन ने ही हमें रेणु, मार्कंडेय, शिवप्रसाद सिंह, महीप सिंह, धमेन्द्र गुप्त, जगदीश चतुर्वेदी, गंगा प्रसाद विमल, निर्मल वर्मा, वैद आदि नाम दिए, जिन्होंने कथा साहित्य की मन्दकिनी को उसकी अजस्त प्रवाह में सहायक बने रहे। नई विचारधारा और परंपरा से प्राप्त विचारों के संघर्ष के माध्यम से यह नई धारा कहानी विद्या को निरंतर पुष्प एवं पल्लवित करते हुए अग्रसर होती रही। मानव युग की प्रवृत्तियों के साथ संकलन त्रय की अवधारणा को आत्मसात करते हुए अपने स्वयं के जीवन से जुड़े हुए अनुभवों को लेकर के काफी सजग रहा है और उसकी टिप्पणियां उसके इन्हीं अनुभवों पर निर्भर करती हैं। यह काल 1980 तक अनवरत रूप से चलता रहा।

10.4. आन्दोलन हीनता का दशक:

बीसवीं शताब्दी का नवां व दसवाँ दशक आन्दोलन हीनता का दशक माना जाता है। यही हाल इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक के लिए भी कहा जा सकता है। हिंदी कहानी के इस विकास यात्रा में मानवीय संबंधों के ताने-बाने और उसके जीवन से जुड़े हुए प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष शक्तियों के निरूपण में मानवीय संवेदनशीलताओं एवं प्रवृत्तियों के मध्य को लेकर के विभिन्न आंदोलनों से अलग एक नवीन मार्ग बनाने की प्रक्रिया को भी गति प्रदान की गई। समकालीन हिन्दी कहानी में जो विचार प्रमुख था,आधुनिक काल में दम तोड़ देता है और विचार धारा के अन्त की घोषणा वस्तुतः आन्दोलनों के समापन का कारण बना। इस समय तक व्यक्तिगत अनुभवों को व सोच को कहानियों में व्यक्त किया जाने लगा।

11. पूर्व की विरासत को समेटने परम्परा :

इस पीढ़ी के कहानीकारों में पूर्व की विरासत को समेटे परम्परा के कहानीकारों से अलग कुछ करने की सोच को प्रमुखता से देखा जा सकता है। हमारे वर्तमान में हमें बहुत कुछ दिया है और भविष्य से हमारी बहुत सारी संभावनाएं हैं जहां यह दोनों बातें सत्य है वहां अतीत ने हमारे जीवन को नवीन आधार प्रदान करने हेतु अनुभवों की वह समृद्ध श्रृंखला प्रदान की है। जिसके द्वारा हम जीवन में

प्रगति और समृद्धि के मार्ग को निरंतर प्राप्त कर सकते हैं। और कठिनाइयां द्वारा ग्रहण और परेशानियों से बचकर आगे बढ़ाने की भूमिका बना सकते हैं। कुछ कहानीकार पूर्व तथा उत्तर की परमपरा के सेतु भी बने, जिनमें महीप सिंह, सेरा यात्री, दूधनाथ सिंह, गिरिराज किशोर, धमेन्द्र गुप्त, हिमांशु जोशी, कामता नाथ, जगदीशचतुर्वेदी, मधुकर सिंह तथ गंगा प्रसाद विमल सम्मिलित हैं।

11.1. समांतर कहानी आन्दोलन:

समांतर कहानी आंदोलन ने आगे जन कहानी को आकार प्रदान किया। उस विचारधारा के प्रति निष्ठा रखने वाले रचनाकारों ने पाठकों आलोचकों का ध्यान आकृष्ट किया। कहानी की नवीनतम धाराओं के अंतर्गत जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो हमें सहज ही यह मार्ग दिखाई पड़ता है। जहां कहानी की मुख्य धारा अथवा हास्य की कहानियों के समक्ष समांतर कहानी का उद्भव और विकास हमें दिखाई पड़ता है। रमेश उपाध्याय, जितेन्द्र भाटिया, दामोदर सरन, सुदीप, हेतु भारद्वाज, उदय प्रकाश तथा असगर वजाहत के साथ-साथ आन्दोलन के अन्त को पुष्ट करने के क्रम में हृदयेश, रमेश चन्द्र शाह, गोविन्द मिश्र, विजय मोहन सिंह तथा राकेश वत्स अपनी सक्रियता को स्वर देते रहे हैं।

11.2. नई पीढ़ी के कहानीकार

स्थापना प्रक्रिया को अपनी लेखनी से स्वर देने के उपक्रम के फलस्वरूप नई पीढ़ी के कहानीकारों ने स्वयं को स्थापित किया। जिसमे, संजीव, बलराम, स्वयं प्रकाश मिथिलेश्वर, अब्दुल बिस्मिल्लाह, विवेकानन्द, मंजूर एहतेशाम, प्रियंवद, अखिलेश, संजय, पंकज विष्ट, सुरेन्द्र तिवारी, बटरोही, द्रोणवीर कोहली, वीरेन्द्र सक्सेना जैसे नाम प्रमुख हैं। इन्ही के साथ अपने प्रथम संग्रह लेकर आने वाले रचनाकार भी रहे हैं, जो कि आज किसी विशेष आंदोलन या विचारधारा से जुड़े हुए नहीं हैं। ये अपनी कहानी में विचार लेकर आते हैं परन्तु व्यक्ति सापेक्षता या समूह सापेक्षता का सर्वथा अभाव दिखाई पड़ता है। इन नव प्रवेशी प्रथम संग्रह को लाने वाले कहानीकारों का उद्भव विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा भी हो रहा है।

12. निष्कर्ष एवं प्राप्तियां :

12.1. इक्कीसवीं शताब्दी भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण की सदी है जिसमें संसार अब वैज्ञानिक चमत्कारों का अनुभव कर आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है। विभिन्न साहित्यिक विधाओं के साथ-साथ हिंदी कहानी में भी यह पूरी तरह परिलक्षित हो रहा है।

12.2. आज का युग भौतिकता, तार्किकता एवं परीक्षण का युग है। मनो विश्लेषण और मनोवैज्ञानिक शिल्प/कथ्य की कहानियों में इसको देखा जा सकता है।

12.3. आज हर क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किए जा रहे हैं। नई कहानी, आधुनिक कहानी, समांतर कहानी जैसे आंदोलन से उपजी कहानी विधा इससे अछूती नहीं है।

12.4. ये वैज्ञानिक एवं तकनीकी का समय ही इस इक्कीसवीं शताब्दी का है। विज्ञान के तथ्यों और विचारों से अद्भुत प्रयोग धर्मी कहानियों का चलन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

12.5. इंसान बहुत ज्यादा व्यस्त हो चुका है और सूचना प्रौद्योगिकी के समय में उसका दूसरे देशों के लोगों से भी मिलना जुलना बढ़ा है। सार्वभौमीकरण के इस युग में देश कल वातावरण का संदर्भ और वृहद और विस्तृत हुआ है संकलन त्रय के नए बदले हुए स्वरूप कहानियों में देखने को मिल रहे हैं।

12.6. ऐसे में वो विदेशी संस्कृति से भी प्रभावित हुआ है और उसका प्रभाव उस पर पड़ा है।

12.7. नए युगबोध और नई परंपरागत विशेषताओं के रूप में आने वाली विश्लेषण परक मनोवृतियों और प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप मानव सुविधा होगी और आत्म केंद्रित होकर भारतीय संस्कृति को भूल बैठा है और जिससे हमारे पारिवारिक रिश्ते की जड़ें भी क्षुब्ध हो रही है। प्राथमिक और द्वितीय रिश्तो के ताने-बाने में आ रहे यह परिवर्तन कहानियों के बदलते हुए स्वरूप में दिखाई देते हैं।

12.8. आज ये जड़ें इतनी कमजोर है कि पति-पत्नी को एक-दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है और संबंध-विच्छेद एक साधारण सी बात है। शारीरिक पारिवारिक विघटन और आत्म क्रंद्रित मनोवृति आज की कहानियों के मुख्य विषय हो गए हैं।

12.9. आज का मनुष्य सुविधा होगी और स्वार्थी हो गया है सभी संबंध हमारी अपनी जरूरत पर निर्भर हो गए हैं ऐसे में मनुष्य सारे रिश्ते भूलते जा रहे हैं। आज की कहानी भी इसकी बांध की के रूप में देखी जा सकती है।

12.10. मां-बाप भगवान का रूप है ये हमें भारतीय संस्कृति ने सिखाया है लेकिन आज पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर हम ये सब भुल बैठे हैं। एकल परिवार नाभिकीय परिवार एवं संयुक्त परिवार की अवधारणाएं अब नए अर्थ की मांग कर रही हैं कहानियों के विषय इनमें मानव जाति की एकरूपता और विकास की संभावनाओं को तलाश कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक लेखक डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत-- प्रकाशक मंशन पब्लिकेशन रोहतक।
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, लेखक डॉ. शिवकुमार शर्मा, प्रकाशन-अशोक प्रकाशन-दिल्ली।
3. आठवें दशक की हिंदी कहानी और जीवन मूल्य लेखक डॉ. रमेश देशमुख-प्रकाशक राजपाल एंड सन्ज़-दिल्ली
4. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य लेखक हुकुम चंद राजपाल, प्रकाशक भारतीय संस्कृत भवन-जालंधर।
5. पश्चिमी आचारविज्ञान का आलोचनात्मक अध्ययन लेखक डॉ. ईश्वरचंद्र शर्मा-- प्रकाशक राजपाल एंड सन्ज़-दिल्ली।
6. हिंदी नाटक मूल्य-संक्रमण लेखक गिरिराज शर्मा -।-- संधी प्रकाशन जयपूर।
7. मानव मूल्य और साहित्य लेखक धर्मवीर भारती-प्रकाशक-भारतीय ज्ञानपीठ-काशी।
8. मूल्य मीमांसा-लेखक गोविंद चंद्र पांडे प्रकाशक-राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी-जयपुर।